अवधी का सहित्यक भाषा के रूप में विकास

अवधी का साहित्य

हिन्दी साहित्य के इतिहास के मध्यकाल (भक्तिकाल) में अवधी काव्य भाषा के रूप में विकसित हुई। अवधी के काव्यभाषा के रूप में विकसित होने के पीछे एक लम्बी परम्परा थी। अवधी को अर्धमागधी से विकसित माना जाता हे। अर्धमागधी जैन मतावलंबियों की धार्मिक भाषा के रूप में कई शताब्दियों तक लोकप्रिय रही, यह कोशी-कोसल प्रदेश की भाषा है। इसमें अनेक भारतीय अनार्य भाषाओं के तत्व भी आ गये। इससे इस भाषा की अभिव्यक्ति क्षमता का विकास हुआ।

अवधी भाषा को जो साहित्यिक प्रतिष्ठा प्राप्त हुई उसमें इस भाषा के भौगोलिक विस्तार की महत्वपूर्ण भूमिका है। लखीमपुर, नेपाल की सीमा से दुर्ग-बस्तर की सीमा तक और कानपुर से मिर्जापुर तक एक विस्तृत क्षेत्र में अवधी प्रचलित है। पश्चिम में पश्चिमी हिन्दी तथा पूर्व में बिहारी हिन्दी के बीच में होने के कारण यह प्राचीनकाल से ही दोनों के मध्य संयोजक का कार्य करती रही है। अवधी तथा इसकी उपबोलियों को बोलने वालों की संख्या तीन करोड़ से कम नहीं है। इस भाषा का जनाधार व्यापक था। इसने व्यापक जनसमूह की भावनाओं और आकांक्षाओं को अभिव्यक्ति का माध्यम प्रदान किया।

अवधी की भाषिक संरचना वर्णन के अनुकूल है। इसमें ऐसे प्रत्ययों का प्रयोग होता है जो इसे विशेष प्रकार की संगीतात्मकता प्रदान करते हैं। इया तथा उवा इसी प्रकार के प्रत्यय हैं। इन प्रत्ययों को संज्ञा और विशेषण दोनों में जोड़कर भाषा में लयात्मकता लायी जा सकती है। मध्यकालीन इतिहास में अवध राजनीति का प्रमुख केन्द्र था। यहाँ पर हिन्दू-मुसलमान दोनों जातियां बसी थीं। हिन्दुओं और मुसलमानों में पारस्परिक सौहार्द्र तथा भाई चारा बना हुआ था। दोनों के सौहार्द्र के फलस्वरूप यहाँ सूफी काव्य का विकास हुआ। सूफी कवियों ने अपनें काव्य के लिए लोक कथाओं का आश्रय लिया। सूफियों ने अधिकतर मसनवी पद्धति में काव्य रचना की। अवधी को काव्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का श्रेय सूफी कवियों को जाता है। इन्होंने ग्रामीण अवधी को काव्यभाषा के रूप में अपनाकर प्रेमाख्यानकों की रचना की। ये कवि मुसलमान थे। फिर भी

इनकी काव्यभाषा अरबी-फारसी शब्दों से बोझिल नहीं होने पायी। इस समय के प्रमुख सूफी कवियों में मुल्ला दाऊद, कुतबुन, मंझन, उसमान और मलिक मुहम्मद जायसी हैं।

अवधी भाषा की पहली रचना सूफी कवि मुल्ला दाऊद की 'लोरकहा' या 'चंदायन' मानी जाती है। यह रचना मसनवी शैली में है। इसकी भाषा ठेठ अवधी है। कुतबुन की रचना का नाम 'मृगावती' है। इनकी कविता की भाषा जनभाषा है। मंझन ने 'मधुमालती' की रचना की। इनकी कविता की भाषा अधिक सरल और सुबोध है। इन दोनों कवियों ने तद्भव शब्दों की उस परम्परा की नींव रखी जिसका अनुकरण बाद के सूफी कवियों ने किया-

प्रेम सुरा जिन अँचइव तिन्है कुको न सुधि
ना चित्त चिन्ता लाज मो विसमो हरख न बुधि।। -कुतबुन

* * *

रतन कि सागर सागरहि, गज मोती गज कोई
चंदन की वन-वन उपजै कि तन-तन होई। -मंझन

अवधी को काव्योत्कर्ष प्रदान करने वाले सूफी कवियों में मलिक मुहम्मद जायसी का स्थान सर्वोपरि है। पद्मावत महाकाव्य को आद्यान्त अवधी भाषा में निबद्ध करके जायसी ने अवधी की अद्भुत काव्य क्षमता की पहचान की। जायसी ने अपनी काव्य भाषा को जनभाषा के अधिक समीप बनाने का प्रयास किया। उनकी काव्यभाषा में अवधी के नितान्त ठेठ शब्द केवल अपनी अर्थवत्ता को ही नहीं बल्कि अपने परिवेश की अर्थव्याप्ति को भी प्रकट करते हैं।

सरवर हिया घटत नित जाई।
टूक-टूक होइ-होइ विहराई।।

सूफी कवि उसमान ने चित्रावली नामक काव्य की रचना की। इनकी काव्यभाषा भी जायसी की तरह जनभाषा के करीब है।

सूफी कवियों के बाद राम भक्त कवियों का स्थान आता है जिन्होंने अवधी को काव्य भाषा के रूप में विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इन कवियों के भाषागत मानदण्ड सूफी कवियों के भाषागत से भिन्न थे। इन कवियों की भाषा शिष्ट वर्ग की परिष्कृत और परिमार्जित साहित्यिक भाषा है। राम भक्ति धारा के कवि संस्कृत की काव्य परम्परा की ओर झुके थे इसीलिए रामकाव्य की भाषा संस्कृत के तत्सम शब्दों से समृद्ध हुई है। इन कवियों का विषय धार्मिक तथा भक्ति प्रधान था जिसके कारण इनके काव्य में संस्कृत के

श्लोकों का समावेश हुआ। रामकाव्य के प्रमुख कवि गोस्वामी तुलसीदास ने सरल संस्कृत के श्लोकों को अपने काव्य में स्थान दिया। उन्होंने लोकभाषा अवधी में संस्कृत शब्दावली का समावेश करके एक प्रकार का भाषिक समन्वय स्थापित किया। अवधी में रचे गये गोस्वामी तुलसीदास के रामचरित मानस की काव्य भाषा ठेठ अवधी नहीं है वह संस्कृत के तत्सम शब्दों से समन्वित है।

जन कारन तारन भव भंजन धरनी भार
की तुम्ह अखिल भुवन-पति लीन्ह मनुज अवतार -तुलसी

रामकाव्य के अन्य कवियों ने भी गोस्वामी तुलसीदास की भाषा का अनुसरण किया। उनका प्रभाव प्रायः सभी रामभक्त कवियों पर पड़ा। स्वामी अग्रदास और नाभादास की वर्णन शैली अपने भाषा सैष्ठव के कारण दर्शनीय है। हृदयराम ने हनुमन्नाटक की रचना की। संवाद शैली की दृष्टि से यह एक सफल ग्रंथ है। मधुसूदनदास ने 'रामाश्वमेध' नामक काव्य में अपने प्रबन्ध कौशल का परिचय दिया है। महाराज रघुराजसिंह ने राम को रीतिकालीन शृंगारी नायक की तरह प्रस्तुत किया। बाबा राधाचरण दास ने राम की विलास क्रीड़ाओं का वर्णन किया। गोस्वामी तुलसीदास जैसी काव्य प्रतिभा के न होते हुए भी इन कवियों ने अवधी को काव्यभाषा के रूप में विकसित करनें में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अवधी को काव्य भाषा के रूप में रामभक्त कवियों द्वारा अपनाने के पीछे एक कारण अवधी का राम की जन्मभूमि की भाषा होना है। जिस प्रकार कृष्ण की लीलाभूमि ब्रज थी ब्रजभाषा कृष्ण भक्त कवियो के लिए पवित्र आकर्षण की वस्तु थी, उसी तरह राम भक्त कवियों के लिए राम की जन्मभूमि की भाषा अवधी थी। यद्यपि रामभक्ति का प्रचार-प्रसार कृष्ण भक्ति की तुलना में कम नहीं हुआ फिर भी अवधी का प्रचार-प्रसार ब्रजभाषा की तुलना में सीमित रहा। ब्रजभाषा और कृष्णभक्ति एक दूसरे के पर्याय बन गये थे किन्तु अवधी और रामभक्ति में यह सम्बन्ध विकसित नहीं हो पाया। अन्य प्रदेशों में जो रामकथा से सम्बद्ध रचनायें प्रस्तुत की गयी, उनमें क्षेत्रीय भाषाओं का प्रभाव ज्यादा रहा, साम्प्रदायिक ढंग से जैसा सुनियोजित एवं समर्पित प्रचार कृष्ण भक्ति का हुआ वैसा रामभक्ति का नहीं हुआ। रामभक्ति मर्यादावादी थी जिससे इसके विकास में बाधा पहुँची। कृष्ण के स्वच्छन्द ललित और मधुर चरित ने बाद में रामभक्त कवियों को भी अपनी ओर आकर्षित किया। इन कवियों में राम भक्ति का गायन ब्रज में शुरू कर दिया। इस प्रकार काव्यभाषा के रूप में अवधी का स्थान ब्रज भाषा ने ग्रहण कर लिया।